



महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संगपत्रिका

वर्ष-9, अंक-9-10
मंगलवार, 13 अक्टू. '87

सम्पादक : साधु मुकुन्दजीवनदास गुरु ज्ञानजीवनदासजी
मानद सहसम्पादक: डॉ. महेन्द्र दवे

वार्षिक चन्दा-10.00
प्रति अंक : 1.00

ज्योतिर्मयी दीपावली.....

दीपावली का परम पवित्र पर्व आ रहा है। दीपावली अर्थात् अन्धकार का सम्पूर्ण नाश व दिव्य प्रकाश का आगमन ! सामान्य कक्षा से अलौकिक दिव्य अक्षरधाम की भूमि के प्रवेश करने 'भक्त' की ओर से सुरुचि वनये जोश से बढ़ाया कदम !! अपूर्णता से पूर्णता की ओर जाने की पवित्र भावना !!! 'भक्त' के जीवन में सच्ची दीपावली व नूतन वर्ष यही कहा जायेगा....

हम सब तो प्रत्यक्ष प्रभु से बंधा-नियंत्रित जीवन जीते हैं। जगत व भक्त में खूब अन्तर है। जगत में व्यापारी बहीखाते लिखकर सारा व्यापार संभालता है। व्यापार में लाभ हुआ या हानि वह हिसाब देखकर दीवाली के दिन सब बही खाते बन्द करके नए बही खाते लिखना शुरू करता है। व्यवहारकुशल व्यापारी का निशान यही होता है कि अब और अधिक परिश्रम करके व्यापार में लाभ कमा लेना है। इससे भी अधिक पिछले वर्ष हुई हानि को सतर्कता से निगाह में रखकर दुबारा वह

हानि न हो, बल्कि किसी भी तरह पूरी हो जाये यही व्यापारी की चाहना होती है। उसी प्रकार भक्त के जीवन में आध्यात्मिक संबंध का अपने प्रभु के साथ बहीखाता होता है। पिछले साल हमारा संबंध प्रभु व संत के साथ कितना बढ़ा? अपने मन, स्वभाव, अहंता, ममता के भंवर में फंसकर हमने साधु के साथ कहां कितनी बेवफाई करके प्रसन्नता खो दी? कहां हमारी निगाह अपने निशान-‘ध्येय’ की ओर से चूक गई? हरेक को अपने अन्तर में यह तलाशी करनी है। पर फिर उस ग्लानि में ही नहीं बैठे रहना है। मन की गन्दी गटर से निकल कर -अपनी गलती से निकल कर, दिल की सच्चाई से गलती का स्वीकार करके प्रायश्चित् रूप प्रार्थना से नया बहीखाता शुरू करे-वह सच्चे भक्त का लक्षण है। तो दीपावली पर दिव्यभाव, अहोभाव, सुरुचि, सहृदभाव के नये दीप प्रगटा का गुणातीतस्वरूपों के प्रति पूर्ण वफादारी से जुड़ जायें। 'कैसे होगा? होगा या नहीं?' में तो ऐसा हूँ,

मैं तो यह नहीं कर पाऊंगा’ इत्यादि निम्न विचारों को पूर्णतया ठुकरा कर प्रभु के दृढ़ आशरे को लेकर निश्चिन्त होकर लग पड़े। अपने प्रभु को कर्ता-हर्ता, प्रेरक, नियंता, अर्न्तयामी, सर्वज्ञ मानकर जीने लग जायें। प्रभु के स्वरूप जो मिले हैं उनका यथार्थ स्वरूप पहचान लें। उनका ऋण स्वप्न में भी न भूलें... बल्कि उनके प्रति भक्ति अदा करने दृढ़ संकल्प लें.....

प.पू. काकाजी की दिव्यवाणी में सभी ने कई बार सुना है—“आप सब को प्रकट प्रभु का संबंध हुआ। प्रभु ने स्वयं अपनी गोद में बिठाये.... आपके सुखों की नहीं बल्कि दुःखों की भागीदारी की... तो हमें तो हर रोज दीवाली.... मौज करो.... आनन्द करो” अहो हो ! स्वयं प्रभु ने हमें स्वीकारा ! जैसे भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को स्वीकारा था। बस इसी मस्ती, आनन्द में खोये रहकर भजन करना है और प्रार्थना करनी है कि हे प्रभु ! हमारी प्रत्येक पल आपकी मूर्ति की स्मृति के सुख से भरी रहे। आप ही हमारी हरके क्रिया के पथप्रदर्शक बनकर वर्तन कराते रहना। हमारे दोष, स्वभाव, प्रकृति, देहभाव कभी भी अपने हमारा संबंध तुड़वाने सफल न हो पायें। हम कभी आपके प्रति गाफिल न हों। आपके परिश्रम को हम समझें... यही दीवाली व नूतन वर्ष पर प्रभुस्वरूपों के चरणों में प्रार्थना।



मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी

महाराज और गुणातीतानंदस्वामी का संबंध अनादि का था, अनोखा था, अद्वितीय था, अजोड़ था, अनुपम था। महाराज की रसधन मूर्ति स्वामी का प्राण थी। महाराज का दर्शन ही उनके नयनों की प्यास की पूर्ण तृप्ति थी। जैसे मछली का जीवन

जल है, वैसे ही महाराज की मूर्ति स्वामी का जीवन थी। ‘भगवत्कृपा’ के पिछले कई अंकों में स्वामी के **सेवकभाव**, महाराज के साथ उनके अद्वैत एक्य संबंध का सहज दर्शन सभी को हुआ होगा। दीवाली व नूतन वर्ष के शुभ अवसर पर उनके जीवन प्रसंगों से प्रेरणा लेकर मौज रूप मिले इन गुणातीत स्वरूपों के साथ हमारा संबंध दिव्य संबंध में परिवर्तित हो यही अभीप्सा। मू.अ.मू. गुणातीतानंद स्वामी के जीवन का निम्न प्रसंग हमें प्रभुस्वरूप गुणातीत संत की सम्यक् पहचान कराता है—

महाराज ने वरजांग जाळियागांव में आकर भक्तराज हीराभाई के घर पर गम्भीर बीमारी ग्रहण की थी। महाराज की बीमारी के समाचार सुनकर महाराज की तबियत देखने व दर्शन करके शान्ति पाने संतमंडल जाळिया आते थे। महाराज एक दो दिन संतों को रोकते, फिर वापस भेज देते थे। ऐसे में सद्. मुक्तानंदस्वामी तथा सद्. गुणातीतानंदस्वामी भी वहां आए और महाराज को दण्डवत् करके पास में बैठे। बीमारी के दौरान पिछले कई दिनों से महाराज ने अन्न ग्रहण नहीं किया था। तो अन्दर से वहां की भक्त रत्नाबाई ने महाराज को पूछा: ‘महाराज ! आज आप कुछ खाओगे?’ तब महाराज ने रत्नाबाई को कहा— ‘रत्नाबाई ! हमें तो कुछ खाना नहीं था, पर आज यह साधु (गुणातीतानंदस्वामी) आये हैं उन्हें देखकर हमारी बीमारी काफी मिट गई है; इसलिए हम थोड़ा खायेंगे।’

पर तुम इस साधु को जानती हो? ऐसा कहकर महाराज ने स्वामी की तरफ उंगली करते हुए कहा—‘देखो रत्नाबाई ! यह साधु तो हमारा धररूप है, उसके सुख से हम सुखी और उसके दुःख से हम दुखी। आज हमारे दर्शन करके उसको सुख

प्राप्त हुआ है, इसलिये ही हमने बीमारी को निकाल दिया। इस साधु को खिलाओ तो हम खायें।' इस प्रकार महाराज बात करते-करते स्वामी की ओर दृष्टि करते हुए स्वामी की महिमा के मर्म के बारे में कहते जाते थे। फिर महाराज का जब थाल तैयार हो गया, तो उसमें से महाराज ने थोड़ा खाया और बाकी की प्रसादी स्वामी व सद्. मुक्तानंदस्वामी को दी। एक और प्रसंग...

एक बार महाराज परमहंसों की पंक्ति में मोतीचूर के लड्डू परोस रहे थे। महाराज परोसते-परोसते जहां स्वामी खाना खाने बैठे थे वहां पहुंचे। स्वामी, आत्मानंदस्वामी और कृपानंदस्वामी के बीच में बैठे थे। इन दोनों सद्गुरुओं के बीच स्वामी को बैठ देखकर महाराज हंसे और बोले—‘अहो ! ये तो दो बाघ के बीच में बकरी !’ इस प्रकार दो-तीन बार बोले। फिर हाथ में तीन लड्डू लेकर वंथली वाले कल्याणभाई के सामने देखकर उनको बोले—‘कल्याणभाई ! इस साधु को पहचानते हो? यह तो हमारा अक्षरधाम है, पहचान करके रखना।’ ऐसा कहकर स्वामी के पत्तर में चार लड्डू डाले। महाराज के शब्दों से कल्याणभाई को स्वामी के स्वरूप का निश्चय हो गया।

★ ★ ★

.....और
श्रीजी महाराज ने
कहा—

मृदंग, सारंगी, सरोद ताल आदि वाद्यों के साथ कीर्तन करने में यदि भगवान की स्मृति न रहे तो वह गाया न गाया बराबर हो जाता है और भगवान को भूलकर जगत में कितने ही जीव गाते और

बजाते हैं पर उन्हें उससे मन की शान्ति प्राप्त नहीं होती है। इसलिये भगवान का कीर्तन, नामरटन व नारायणधून्य आदि करना वह भगवान की मूर्ति की स्मृति करते हुए ही करना चाहिए और भजन करते समय तो अपनी वृत्ति भगवान में रखे, पर भजन से उठने के बाद अन्य क्रियाओं को करते समय यदि भगवान में वृत्ति ना रखें तो उसकी वृत्ति भजन के समय भी भगवान के स्वरूप में स्थिर नहीं रह पाती। इसलिये चलते-फिरते, खाते-पीते सब क्रियाओं में भगवान के स्वरूप में वृत्ति रखने का अभ्यास करना चाहिए, तो भजन में बैठने पर भगवान में वृत्ति स्थिर रहती है और जिसकी वृत्ति भगवान में रहने लगती है उसे तो कामकाज करते हुए भी भगवान में वृत्ति रहती है। जिसे गाफलाई हो वह यदि भजन में बैठे तो भी भगवान में उसका मन स्थिर नहीं रह पायेगा। इसलिए सावधान होकर भगवान के स्वरूप में वृत्ति रखने का अभ्यास भगवान के भक्त को करना चाहिये।

गढडा प्रथम प्रकरण-22

मंगलवार, 20 दिसं. 1819

★★★

ब्रह्मप्रवाह

दीवाली व नया वर्ष यानि सभी सत्संगियों के लिए आध्यात्मिक बही और अखंड अक्षरधाम में ही रहकर ही जीवन जीने हेतु सत्यसंकल्प का नव निर्माण करने की मंगलकारी घड़ियां !

तो, हम अपने ही निरीक्षक बनकर अपने विकासक्रम का सही हिसाब निकाल कर पूर्वग्रहों और मान्यताओं के बंधनों को लांघकर, भूतकाल की स्थिति को सदन्तर भूलकर, भविष्य की जरा भी चिन्ता किये बिना गुरुदेव योगीजी महाराज द्वारा दी यह अनुपम दिव्य पल से वर्तमान में जीने

और ऐसे दिव्य समाज के मुक्तों के साथ आनंद ही करने का दृढ़ संकल्प करें। महाराज ने कहा—

देहाभिमान रुपी एक ही दोष होगा तो सब दोष रहेंगे और आत्मनिष्ठा होगी तो सब गुण आयेंगे। परन्तु, गुणातीतज्ञान की दृष्टि से प्रखर आत्मनिष्ठ पुरुषों का भी यदि ब्रह्मस्वरूप संतो को विश्वास न आये, तो अन्तर की प्रसन्नता प्राप्त नहीं होगी। इसलिये, ब्राह्मीस्थिति में भयंकर से भयंकर दोष कृतघ्नीपन का है। वह हमें बाधारूप न बने इसके लिये सर्वप्रथम प्रत्यक्ष स्वरूपों को दिल की सच्चाई से अन्तर की प्रार्थना करें।

महाराज और गुणातीत संत ही अपना मध्य बिन्दु रहे और उनके मुताबिक सम्पूर्ण ठहरावरहित और गुरुमुखी सचेतन साक्षीभाव से सहज वर्तन करा जाये ऐसी अभीप्सा रखनी।

कठिन में कठिन है—स्वभाव जीतना। पर हमें ही वह रखना है और भीतर में वह खूब जंचता है,

सो वह रहा हुआ है। पर, सचमुच ही यदि दृढ़ संकल्प करके बड़ों को प्रार्थना करें, तो तत्काल टल जाये। सो दुखी या बेचैन जो रहते हैं, उसका मूल-भूत कारण हम स्वयं ही हैं। तो हमारा सत्य हम स्वयं ही ढूँढकर उस रीत से पल-पल जीना शुरू करें और बड़े पुरुष ऐसा बल दें—यही प्रार्थना।

दुर्लभ में भी दुर्लभ एकान्तिकपन। परन्तु, इससे भी अधिक दुर्लभ है—पांच जने, एक रुचि, एक भावना, एक तमन्ना और एक रटन से अद्वैत भाव से वर्तना। और तब, भगवान पल-पल अखंड काम करते बनेंगे। यह अत्यन्त अशक्य भूमिका स्वामिश्री जी शीघ्र सिद्ध कराये और उसके लिये सभी एकान्तिकों साधक वर्ग के लिए प्रार्थना करके चार पंखुड़ियों के निर्दोषकमल को विकसावे व सम्पूर्ण खिलावे यही अभ्यर्थना।

नवें., 1974

प.पू. काकाजी महाराज

व्रतोत्सवसूची

1. दि.	9.10.87	शुक्रवार	ब्रह्मस्वरूप पू. जागास्वामी की जन्म जयंती
2. दि.	18.10.87	रविवार	एकादशी, व्रत
3. दि.	20.10.87	मंगलवार	धनतेरस
4. दि.	22.10.87	गुरुवार	दीपावली, लक्ष्मी पूजन
5. दि.	23.10.87	शुक्रवार	अन्नकूट, गोवर्धन पूजा, अशोकविहार मंदिर में ठाकुर जी की आरती व अन्नकूट महाभोग
6. दि.	24.10.87	शनिवार	भैया दूज
7. दि.	27.10.87	मंगलवार	लाभपंचमी
8. दि.	31.10.87	शनिवार	श्री हरिजयंती
9. दि.	2.11.87	सोमवार	देवउठी एकादशी, चातुर्मास समाप्ति
10. दि.	3.11.87	मंगलवार	ब्र.स्व. भगतजी महाराज की पुण्यतिथि

PUBLISHED By SADHU MUKUNDJIVANDAS FOR YOGI DIVINE SOCIETY,

A 103, Ashokvihar-III, Delhi-110 052. India, Tel. 7128838

Printed at R.P., Printers, Shahdara, Delhi-110 032